लोक मंगल हो पत्रकारिता का धर्म

ज्ञानसरोवर। कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता विश्वविद्यालय रायपुर के उप कुलपति डॉ.मानसिंह परमार ने ज्ञानसरोवर परिसर माउण्ट आबू में ब्रह्माकुमारीज के मीडिया प्रभाग द्वारा आयोजित मीडिया सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधन करते हुए कहा कि हजारों वर्षों से भारत देश सकारात्मक सोच व अच्छे समाज की संरचना के लिए चिन्तन का परिचायक रहा है, लेकिन आज इसी देश में उन विषयों में गहन चिन्तन की आवश्यकता अनुभव की जा रही है।

महाभारत व रामायण के प्रमुख पात्रों के हवाले से डॉ. मान ने कहा कि नारद मुनि पत्रकारिता के आदर्श थे क्योंकि उनकी सूचनाओं की विश्वसनीयता पर पर कभी प्रश्न चिन्ह नहीं लगा। दूरदर्शी चिन्तक होने के नाते उन्होने हजारों साल पहले जल प्रबंधन की बात की जिसकी जरूरत अब शिद्दत से महसूस की जा रही है। वस्तु परकता व तटस्थता के मामले में महाभारत काल के संजय को आदर्श माना जाता है। कबीर अपने समय के महान प्रचारक थे जिन्होने ऐसी वाणी बोलने का उपदेश दिया कि जिसे सुनकर कोई आपा ना खोये। विदुर जैसा विचारक अपने आप में बेमिसाल था। श्रीकृष्ण व अर्जुन के बीच हुआ संवाद संचार का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण माना जाता है। इसके विपरीत अब हमारा 90 प्रतिशत समय जब संचार व संवाद में बीत रहा है तो हम कई बार दिशा भ्रम होने की समस्या से ग्रस्त हो जाते हैं।

डॉ.मान ने कहा कि वर्तमान सदी में जब विधायिका, न्यायपालिका व कार्यपालिका से समस्या का समाधान होता नहीं दिखता तो लोग आशा भरी निगाहों से मीडिया की ओर देखते हैं। यदि लोक मंगल को हम पत्रकारिता का धर्म मान लें और लक्ष्मण रेखा का उल्लंघन ना करें तो सकारात्मक परिवर्तन लाना मुश्किल नहीं होगा।

सम्मेलन का विधिवत् उद्घाटन आमंत्रित अतिथियों ने दीप प्रज्जवलित करके किया।

कार्यक्रम के विशिष्ठ अतिथि आई.बी.एन.7 चेनल के उप प्रबंध सम्पादक सुमित अवस्थी ने विभिन्न मंचों से इलेक्ट्रानिक मीडिया की आलोचना का सटीक जवाब देते हुए कहा कि सकारात्मक समाचार या कार्यक्रम जब टी.वी. चैनल पर दिखाये जाते हैं तो टी.आर.पी. के विश्लेषण से पता चलता है कि दर्शक उनमें रूचि नहीं ले रहे। इस प्रसंग में उन्होने शाबाश इंडिया साप्ताहिक कार्यक्रम की चर्चा करते हुए कहा कि आदर्श पत्रकारिता के प्रकाश-स्तम्भ को संबल प्रदान करने वाले समाचारों और पत्रकारों को शाबाशी देने के लिए पाठकों व दर्शकों को आगे आना चाहिए। समाज को लूटकर खाने वाले लोगों के स्टिंग आपरेशन को सामाजिक बदलाव लाने का हिस्सा बताते हुए उन्होने कहा कि पत्रकारिता को पहले की तरह ही पवित्र व्यवसाय के रूप में कायम रखना होगा। पत्रकार यदि आदर्शों से जुड़ें और अपने शुभ लक्ष्य से भटके नहीं तो निश्चित रूप से सकारात्मकता की ओर बढ़ते हुए हम स्वयं को बदलेंगे, उससे समाज व देश भी अवश्य बदलेगा। उन्होने कहा कि इलेक्ट्रानिक मीडिया पर एक संस्था का अंकुश है लेकिन सोशल मीडिया बेलगाम चल रहा है। इससे जुड़े करोड़ों लोग प्राप्त होने वाली अधकचरी सूचना की विश्वसनीयता की जाँच किए बिना उसे जंगल की आग की तरह आगे फैला रहे हैं। आधे से ज्यादा फर्जी खातों व प्रायोजित कार्यक्रमों पर आधारित सोशल मीडिया अच्छे समाज की संरचना के लिए सबसे बड़ी चुनौति है।

संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने वीडियो संदेश के माध्यम से सम्मेलन के लिए शुभकामनाएं और प्रतिभागियों को आशीवर्चन देते हुए कहा कि जहाँ शांति, स्नेह व समन्वय नहीं होगा वहाँ सफलता पाँव नहीं धरती। नकारात्मक सोचने वाले लोगों को हम अपने पावन लक्ष्य में बाधक न बनने दें। अच्छी भावनाएँ विकसित करें, मनन और चिन्तन व शुभभावना से वायुमण्डल को शुद्ध करते हुए सादा व पवित्र जीवन अपनाते हुए उच्च विचारों से विश्व परिवर्तन के अभियान में सहभागी बनें।

मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु.करूणा ने कहा कि भारतीय मीडिया पूर्णतः जागृत है। जरूरत इस बात की है कि सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए देश के प्रति अपने दायित्व का बखूबी निर्वहन करें।

प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु.सुशांत ने मीडिया कर्मियों से कहा कि वे वातावरण व व्यक्ति विशेष से प्रभावित न होकर अंतर्आत्मा की आवाज सुनें और लोक रूचि को ध्यान में रखते हुए निष्पक्षता से कार्य करें।

संस्था के कार्यकारी सचिव ब्र.कु.मृत्युंजय ने विश्वास व्यक्त किया कि सम्मेलन में भाग ले रहे पत्रकार शांति, सद्भाव और सकारात्मकता का संदेश लेकर जाएंगे और न केवल इन गुणों को अपने जीवन में धारण करेंगे बल्कि कार्यशैली का अभिन्न अंग भी बनायेंगे।

स्वच्छ भारत मिशन के विशिष्ठ अधिकारी अक्षय राऊत ने संस्था के सामाजिक सरोकारों की प्रशंसा करते हुए कहा कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की शक्ति मीडिया में है और इसका तन्मयता से सदुपयोग करना चाहिए।

ब्रह्माकुमारीज के आई.टी.प्रभाग की अध्यक्षता डॉ.निर्मला दीदी ने पत्रकारों का आहवान किया कि स्वयं परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का जो मूल मंत्र यू.एन.ओ. के दिशा निर्देशों के अनुसार संस्था ने जन-जन तक पहुंचाने का बीड़ा उठाया है उससे जुड़कर इस महान कार्य को सफल बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायें।

बैंगलोर से आए राजू भाई व साथियों ने गुरू वंदना एवं अहमदाबाद की विशम्भरा ने स्वागत नृत्य द्वारा दर्शकों को भावविभोर कर दिया।